ISSN- 2350-0530(O), ISSN- 2394-3629(P)
Index Copernicus Value (ICV 2018): 86.20
DOI: https://doi.org/10.29121/granthaalayah.v7.i11.2019.3739

INTERNATIONAL JOURNAL OF RESEARCH – GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository

Arts

काव्यचित्र एवं चित्रकाव्य

अनीता जोशी [1]
[1] महारानी लक्ष्मीबाई शासकीय स्नातकोत्तर कन्या महाविद्यालय, किला मैदान, इन्दौर (म.प्र)

शोध-सारांश
कला एवं काव्य एक-दूसरे के पूरक हैं। ललित कलाओं में काव्य और काव्य में ललित कलाओं के समावेश ने काव्य एवं कला दोनों को ही सरसता एवं मोहकता प्रदान की है। प्रस्तुत शोधपत्र काव्य एवं चित्रकला के इसी अंतःसंबंध की व्याख्या करता है, जिसमें चित्रकला एवं काव्य की समानता, चित्रों का काव्य सृजन में योगदान एवं काव्यानुभूतियों की चित्रकला में अभिव्यक्ति को मूर्त रूप दिया गया है।

मुख्य शब्द – काव्यचित्र, चित्रकाव्य

Cite This Article: अनीता जोशी. (2019). "काव्यचित्र एवं चित्रकाव्य." *International Journal of Research - Granthaalayah*, 7(11SE), 207-215. https://doi.org/10.5281/zenodo.3591507.

कला और साहित्य मानव की रचना प्रक्रिया से प्राप्त कलात्मक निरूपण है। जिस तरह मानव के मानस में संवेदना, अनुभूति से प्राप्त ज्ञान संचित रहता है, जो उसे नई अनुभूतियों को समझने में सहायक सिद्ध होता है उसी तरह समूची जाति का अतीत उसके साहित्य व कला में सुरक्षित रहते हैं।

अभिव्यक्ति का प्रथम माध्यम चित्रकला को माना गया है। आदिकालीन मानव द्वारा अपनी अनुभूतियों की अभिव्यक्ति चित्रों के माध्यम से की थी, तत्पश्चात् भाषा के विकास, लिपि की खोज एवं शब्द सृजन से काव्यकला का विकास हुआ।

विद्वानों का मत है कि चित्रों से भाषा विकसित हुई। चित्रकला का माध्यम रेखा व रंग तो काव्य का माध्यम शब्द है। काव्य रचना जिस वर्ण व अक्षरों में अंकित की जाती है उसका मूल चित्राक्षर है। "जो भाव मन में उठते हैं, काव्य उन्हें शब्दों के माध्यम से निश्चित अर्थ और चित्रकला उन्हें मूर्त अभिव्यक्ति देती है इसीलिए काव्य और चित्रकला में समानता है अतः कवि व चित्रकार एक हैं। वर्ण, छन्दमय अभिव्यक्ति काव्य है और रेखा रंग की साधना है चित्र। साधारणतया चित्र को रेखाबद्ध कविता और काव्य को शब्दबद्ध चित्र कहा है। भाव लावण्य योजना के सहारे ही हम कविता व चित्र को एक भूमि पर उतार सकते हैं। भावों की अभिव्यक्ति चित्रों में भी रहती है तथा काव्य में भी।"[1]

भामह के अनुसार "विश्व का ऐसा कोई शब्द, अर्थ, शिल्प या क्रिया नहीं है जो काव्य का अंग न हो जाए।"[2]

भामह के इस भाव की समता आचार्य भरत मुनि ने भी की है।[3]

ISSN- 2350-0530(O), ISSN- 2394-3629(P)
Index Copernicus Value (ICV 2018): 86.20
DOI: 10.5281/zenodo.3591507

काव्य के शब्दों में रेखांकन की प्रवृत्ति और शक्ति निहित है। वासुदेव शरण अग्रवाल के अनुसार साहित्य के प्रेक्षणीयता कलाओं के लिए जीवन है, अन्यथा साहित्य निष्क्रिय है। काव्य एवं कला के प्रेरणा तत्व व अवतरण की भूमि समान है। ''कविता और चित्र में अनुभूति, कल्पना, सौन्दर्य, रस अलंकार सभी तत्वों का अपना अस्तित्व और महत्व है। कविता में शब्दार्थों के माध्यम से सौंदर्य बिम्बों, प्रतीकों, अलंकारों का सहारा लेकर सौंदर्य की सृष्टि होती है तथा रसानुभूति में परिवर्तित हो जाती है। चित्र में यही अनुभूति विभिन्न रंगों और रेखाओं के संयोजन द्वारा रसज्ञ का ध्यान आकृष्ट करती है। इस प्रकार विभिन्न तत्व काव्य, कला और चित्रकला द्वारा सृजन में कभी उपकरण तो कभी उपादान और कभी माध्यम बनकर सहायक होते हैं तथा अपनी स्थिति के अनुसार भूमिका निभाते हैं।''[4]

कलाकार व कवि समान मनोगत भाव लिए भिन्न-भिन्न साधनों से एक ही साध्य उस परम तत्व को प्राप्त कर अंतरात्मा की संतुष्टि करते हैं। जहाँ कवि की लेखनी चित्रकार के रेखांकन-चित्रांकन से अभिभूत हो भावों की रसधारा बहाती है वहीं कवि के हृदय की अनुभूति एवं कल्पना की उड़ान चित्रकारों को प्रेरणा देती है। इन दोनों के इस प्राचीन पारस्परिक समन्वय से ही काव्य में चित्रात्मकता तथा चित्रों में काव्यात्मकता के दर्शन होते हैं। इस प्रकार भारतीय साहित्य ने जहाँ चित्रकला को समृद्ध किया वहीं चित्रकार ने भी साहित्य की व्याखया में अपना योगदान दिया है। अतः कहा जा सकता है कि चित्र दर्शन से काव्य तथा काव्य रचना से चित्र सृजन की प्रक्रिया भारत में प्राचीन काल से ही प्रवाहमान रही है। इसलिए भारतीय विचारकों में श्री क्षेमेन्द्र ने इसी दृष्टि से कवियों के लिए चित्रकला के ज्ञान को आवश्यक मानते हुए कहा है :-

''लोकाचार परिज्ञानं विक्ताखयायिका रसः।
इतिहासानुसरणं चारूचित्र निरीक्षणम्॥
शिल्पिनां कौशलप्रेक्षा वीर युद्धावलोकनम्।
शोकप्रलाप श्रवणं श्मशानारण्य दर्शनम्॥''[5]

काव्य और चित्र की परस्पर निर्भरता को देखकर ही साहित्यकार असगर वजाहत कहते हैं कि ''अच्छी कविता लिखना सीखना है तो चित्रकारी को समझिए और अच्छी चित्रकारी करनी हो तो कविताएँ पढ़िए।''[6]

कवि की भावनाओं को रंगों की पोशाक पहनाकर आकार प्रदान करना चित्रकार का उद्देश्य होता है। अतः भारतीय कला को जानने के लिए उपवेद, शास्त्र, पुराण आदि धार्मिक ग्रंथों एवं साहित्य का सहारा लेना पड़ता है, वहीं साहित्य की सृजनात्मकता को जानने हेतु कला को समझना आवश्यक है। ऐसे कई उदाहरण मिलते हैं जहाँ काव्य के विषयों ने चित्रकार को प्रभावित किया वहीं चित्रों ने भी काव्यसृजन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

चित्रकला संबंधी उल्लेख उपनिषदों में मिलते हैं। महाभारत काल में भी महलों और मंदिरों में चित्र बनाए जाते थे। कौटिल्य ने अपने अर्थशास्त्र में विभिन्न चित्राविधियों का वर्णन किया है। प्राचीन साहित्य में भी चित्रकला के संबंध में बड़े रोचक उदाहरण मिलते हैं। कालिदास ने अपनी कृतियों में चित्रशालाओं का वर्णन किया है। वे कला के 64 भेदों से अच्छी तरह से परिचित होने के साथ ही कला के सच्चे मर्मज्ञ और पारखी थे। इसलिए अपनी रचनाओं के माध्यम से उन्होंने कलाप्रेम को व्यक्त किया। अपने नाटकों में उन्होंनें नृत्य, संगीत और चित्रकला के ज्ञान व चिंतन की अनुभूतियाँ दिखाई। कलिदास ने अपने रघुवंश के सोलहवें सर्ग में अयोध्या नगरी का वर्णन करते हुए लिखा है - "वहाँ के प्रासादों की भित्तियों पर पहले से ही नाना भाँति के

पद्यवन चित्रित है, जिनके मध्य बड़े-बड़े हाथियों को दर्शाया गया है। उन हाथियों को हथिनियाँ कमल की डण्ठल देती हुई अंकित की गई थीं। "ऐसा प्रतीत होता है कि कालिदास चित्र का वर्णन कर रहे हैं किन्तु कालिदास चित्रों से प्रभावित हुए होंगे और काव्य सृजन किया होगा। अतः निश्चित ही कालिदास की रचना संसार में चित्रों की भूमिका रही होगी।

हिन्दी साहित्य के संदर्भ में देखा जाए तो भक्तिकाल में चित्रकला, मूर्तिकला ने बड़ी ही भूमिका निभाई। मुगलों के अत्याचारों से त्रस्त जनता ने भक्ति मार्ग में शरण पाई। वल्लभाचार्य के वैष्णव धर्म के प्रचार-प्रसार के कारण कृष्ण भक्ति का महत्व सर्वोपरि माना जाने लगा और तत्कालीन चित्रकारों के समक्ष भगवद् पुराण ही अपनी कलाकृतियों के लिए प्रमुख विषय रह गया। यही कारण है कि सत्रहवीं शताब्दी के मध्य भगवद्पुराण की बहुत सारी सचित्र प्रतियाँ उपलब्ध होती।

वल्लभाचार्य सगुण उपासक होने के साथ कुशल चित्रकार व कवि थे। शुद्धाद्वैत दर्शन में भगवान के स्मरण की इच्छानुभूति होने पर भक्त अपने आनंद आदि गुणों के अंशों को तिरोहित कर स्वयं जीव रूप ग्रहण करता है और भगवान के विविध माया रूपी अंश को सत्य करने के लिए चित्रों का सहारा लेता है ताकि वह परमतत्व का साक्षात्कार कर सके। इस प्रकार वह चित्रों का भी विनिर्माण करता है। वल्लभाचार्य स्वयं चित्रकार थे तो स्वयं इन कृतियों पर रीझ कर शब्दों से परम तत्व का रूप खड़ा करते होंगे।

सूरदास के जन्मान्ध होने के संदर्भ में कई किवदंतियाँ प्रचलित हैं। वे कृष्ण-लीलागान करते थे जो सापेक्ष दर्शन के बिना असंभव सा प्रतीत होता है। सूरदास के दशम स्कंध के पूर्वार्ध में कृष्ण जन्म से लेकर राधा की अनंत भक्ति की परिणिति है।

देवनि दिवि दुदंभी बजाई, सुनि मथुरा प्रगटे जादव पति।
विद्याधर-किन्नर- कलोल, मन उपजावति मिलि कंठ अमित गाति।
गावत गुन गंधर्व पुलकित, नचति सब सुर-नारि रसिक आति।[7]

भरहुत साँची, अजंता, एलोरा में जन्म अवसरों पर प्रस्तुत संदर्भ, प्रस्तर और भित्ति पर उकेरे और चित्रित हैं जिसे सूरदास जन्म के अवसर पर प्रस्तुत करते हैं। यहाँ प्राचीन परम्पराओं का पुनः प्रस्तुतीकरण काव्य के माध्यम से हुआ है। उसी प्रकार यशोदा का हरि पालने में झुलाना, कंस-पुतना प्रसंग, कागासुर वध, सतसुर वध आदि चित्रकारों के चित्रण से प्रभावित हैं।

रीतिकालीन कवि बिहारी के संबंध में यह स्पष्ट उल्लेख नहीं मिलता कि उन्होंने चित्रों को देखकर काव्यों का सृजन किया होगा किन्तु उनके दोहों को देखकर ऐसा प्रतीत होता है कि सृजक के मन में झिनी सी आकृति का प्रादुर्भाव होता है जैसे ही कवि के मन में पहली पंक्ति नाचती है फिर वह अपनी तूलिका से उसे फलक पर साक्षात करने के लिए प्रयत्नरत हो जाता है। बिहारी के इन दोहों को देखिए जिसमें काव्य में चित्रगत भाव को मूर्त करने और चित्र में काव्यगत भाव को अभिव्यक्त करने के लिए रंगरेखा और गति के माध्यम से बिम्बों को निर्मित किया गया है –

अधर धरत हरि के परत, ओंठ दीठ पट जोती,
हरित बांस की बाँसुरी, इन्द्रधनुष दुति होती।
बतरस लालच लाल की, मुरली धरी लुकाई।
सौंह करैं भौंहनु हँसै, दैन कहैं नटि जाई।।

इसी प्रकार चित्रकार कवि दार्शनिक मौलाराम गड़वाली चित्रकारों में ऐसे चित्रकार थे जो स्वयं चित्र बनाते और पद्य रचना कर उसका परिचय भी देते। जैसे चकोर खिलावत के चित्र पर वे लिखते हैं:-

बाग विलोकन की अवला, निकसी मुख चंद दिखावत ही।
लखि संग चकोर करत, शब्द कझेर सुनावत 'ही' ।।
उझकि उझकि फिरकी सी फिरी, चहूं आस पसहि।
कहत कवि मौलाराम चली हटि कै दुपटः पट चोंच पचावत हि।।

उन्नीसवीं शताब्दी में सरस्वती पत्रिका के हर अंक में उस समय के अग्रणी चित्रकारों राजा रवि वर्मा, ब्रजभूषण राज चौधरी, बाबू वामापद बन्धोपाध्याय, श्रीयुत एम.वी. धुरंधर आदि के चित्रों को छापा जाता था तथा उस समय के अग्रणीय कथाकार इन चित्रों पर कविता का सृजन करते थे। साहित्य में प्रबंध काव्य रचना प्रवृत्ति के आरंभ के प्रेरक महावीर प्रसाद द्विवेदी तो थे ही इसके अतिरिक्त पौराणिक काव्यानमूलक काव्य प्रणयन के मूल में उस युग के चित्रकार रवि वर्मा के पौराणिक चित्रों का योगदान रहा। बाबू श्याम सुन्दरदास के सम्पादकत्व में इन चित्रों के आधार पर छोटे-छोटे आख्यानक कविताओं का सृजन होने लगा। परिणाम की दृष्टि से मैथिलीशरण गुप्त ने सबसे ज्यादा कविताएँ लिखीं। उनके द्वारा वर्णित कथा प्रसंग महाभारत के इति वृत्त से संबंधित है। चित्रों के आधार पर छोटे-छोटे कथाकाव्य लिखने की प्रथा इतनी प्रचलित हो गई कि तत्कालीन पत्रिकाओं "इन्दु " तथा "मर्यादा " तथा बाद में प्रकाशित चाँद और माधुरी में भी इस प्रकार की रचनाएँ प्रकाशित होने लगीं।

राजा रवि वर्मा के दस चित्रों पर राय देवी प्रसाद चौधरी ने दस लम्बी कविताएँ लिख डाली। उनके लक्ष्मीजी के चित्र पर वे लिखते हैं:-

सत्य, प्रभा, सत्य, प्रकाशिकासी
प्रभातकालीन प्रदीप्ति कासी
सत्यपूर्ण चन्द्रोज्ज्वल - जन्द्रिकासी
आलोक विद्‌युत - द्‌युति मालिकासी।[8]

ऐसे ही निर्भीक होकर बैठे परशुराम के चित्र को देखकर कामता प्रसाद गुरू ने लिखा:-

पर सहसा यह रूप देखा होता विस्मय-
आर्य लोग क्या समय थे ऐसे निर्भय
क्या आज हम सब जो बने हैं निर्बल कामी
रहते थे स्वाधीन समर में होकर कामी।।[9]

चाँद पत्रिका में चित्रकार सरला वर्मा के चित्र पर कवि कुमार लिखते हैं:-

यह टूटी सी कब्र और
टूटी सी अभिलाषा मेरी
तुम्हें शांति क्या दिला सकेगी
टूटी सी भाषा मेरी।।[10]

पत्रिका माधुरी में भी कुछ विशिष्ट चित्रकारों की चित्राकृतियों का प्रकाशन होता था साथ में कुछ पद्य रचे जाते थे या फिर मतिराम, बिहारी आदि कवियों की पंक्तियाँ उद्धृत कर दी जाती थीं। "माधुरी " उन पत्रिकाओं में से थी जिन्हें छायावाद का समर्थन मिला11 और इसका मुख्य कारण था - छायावादी कवियों द्वारा चित्रकला का खुलकर प्रयोग। इन कवियों ने चित्रकला से संबंधित उपकरणों जैसे रंग, रेखा, तूलिका, प्याली, चित्रफलक आदि का उल्लेख करते हुए अपनी अनुभूतियों, भावों, कल्पनाओं को चित्र रूप में प्रस्तुत किया। पंतजी ने कहा है "छायावादी शैली में भाव और रूप अन्योन्याश्रित होकर शब्द की चित्रात्मकता में प्रस्फुटित हुए हैं। "[12]

छायावादी कवयित्री महादेवी वर्मा एक सफल चित्रकत्री होने के नाते चित्रकार को सफल कवि मानती हैं। उनकी कविताओं में चित्रों जैसा संस्मरण का आभास मिलता है। 'दीपशिखा' तथा 'यामा' में अपने गीतों के साथ इन्होंने चित्र भी अंकित किए हैं। कहा जा सकता है कि 'यामा' तथा 'दीपशिखा' कविता तथा चित्रकला के संधिस्थल हैं। 'दीपशिखा' उनका प्रिय बिम्ब है। अभिशापों तथा वरदानों के प्रतीक काँटों और फूलों में बंधे हुए हाथों को प्रस्तुत करता हुआ दीपशिखा का अंतिम चित्र पूरे गीत को गति प्रदान करता है।

अली मैं कण-कण को जान चली,
सबका क्रंदन पहचान चली![13]

महाप्राण सूर्यकांत त्रिपाठी निराला ने अपने कलकत्ता प्रवास के दौरान चित्रों पर कविता सृजन किया। पंडित मोतीलाल के "मनहर चित्रावली "में तीस चित्र थे जिस निरालाजी ने तीस कविताएँ लिखीं। निरालाजी ने अपनी सृजनात्मक शब्द विन्यास द्वारा इन चित्रों में भावों की संगति निवेशित की। उन्होंने मोतीलाल के चित्र नारी को विनय शीर्षक दिया और लिखा –

"पुष्पों के अंगों में,
प्रभु, अगणित रंगों में,
व्यथा-वाहिनी-विपुल भाव की,
शत-शत तरल तरंगों में,
अपनी मृदुल तूलिका के चित्रण में तुम चाहते हो,
अपनी भाषा में अपने भावों में क्या कहते हो?

शमशेर बहादुरसिंह आधुनिक हिन्दी कविता के प्रगतिशील त्रयी के एक स्तम्भ हैं और चित्रकला से अत्यंत प्रभावित भी। शमशेरसिंह ने वानगो, गोग्वँ और पिकासो की कृतियों को देखा और इनसे प्रभावित होकर कविता सृजन किया। वे इनसे इतने प्रभावित थे कि इन्होंने "अपनी कुछ और कविताओं " के संकलन में इन्हें संकलित करने का आधार इस प्रकार दिया "तीन और कविताएँ भी जरूर ऐसी हैं जो मुझे पसंद हैं और जो सुरिया लिस्ट हैं --- मगर ये लहरें घेर लेती हैं।" [14]

पिकासो की एक पेंटिंग पर इन्होंने लिखा है:-

"जिन्दगी की चार तरफें मिट गई हैं
मिट गई हैं।
बंद कर दो सांस के पर्दे

ISSN- 2350-0530(O), ISSN- 2394-3629(P)
Index Copernicus Value (ICV 2018): 86.20
DOI: 10.5281/zenodo.3591507

चाँद क्यों निकला, उभर कर ---?
घरों में चूल्हे पड़े हैं ठण्डे।" [15]

अशोक वाजपेयी हिन्दी के वरिष्ठ कवि, आलोचक, स्तम्भकार और ऐसे व्यक्तित्व हैं जो साहित्य, कला और संगीत पर समानाधिकार रखते हैं। इनका मानना है कि साहित्य और कला की साँझा बिरादरी होती है। चित्रकला से इनका गहन अनुराग है और कई चित्रकारों से व्यक्तिगत संबंध भी। मक़बूल फिदा हुसैन, सैयद हैदर रजा, जगदीश स्वामीनाथन के चित्रों को देखकर इन्होंने अनेक कविताएँ लिखीं। मक़बूल फिदा हुसैन के चित्र को वाजपेयीजी ने इस प्रकार उकेरा:-

"उजाले की दो गहरी लाल आँखें
मुड़ गई उस सड़क पर
जो मेरे घर के अंधेरे के पास से गुजरती है -
तालाब सोए धंध में खिलखिलाकर एक मूरी हँसी
हँसता है कोई" [16]

"जगदीश स्वामीनाथन के चित्र पर उनका काव्य बिम्ब देखिए -
"चट्टान के ऊपर बैठी है, नहीं बैठी है,
एक उड़ती हुई चिड़िया,
एक अचल चिड़िया।" [17]

चित्रकला से प्रभावित काव्य सृजन की विवेचना के पश्चात यदि हम काव्य पर आधारित चित्रकला की परम्परा पर दृष्टि डालते हैं तो पाते हैं कि काव्य के चित्रण की परम्परा प्राचीनकाल से ही प्रवाहमान रही है। वर्तमान में भी इसकी धारा क्षीण नहीं पड़ी है। आज भी भारतीय धर्म, संस्कृति एवं साहित्य चित्रकारों के प्रिय विषय हैं।

प्राचीनकाल से ही भारत में पौराणिक आख्यानों का चित्रण हुआ। अजंता के भित्ति चित्र आर्यशूर की जातक माला से चित्रित किए गए थे जिनमें बुद्ध के पूर्वजन्म की कथाएँ अंकित थीं। नवीं शताब्दी में पाल शैली का उदय हुआ जिसमें महायान बौद्ध पोथियों का चित्रण मिलता है।

ग्यारहवीं शताब्दी में जयदेव द्वारा रचित गीतगोविंद जिसे अप्रतिम काव्य की संज्ञा दी गई उसने चित्रकारों को बहुत आकर्षित किया। चित्रकला की लगभग समस्त शैलियों में जयदेव की गीतगोविंद को अंकित करने का प्रयास किया गया है।

'गीतगोविन्द' ने चित्रकला के माध्यम से चाक्षुक अभिव्यक्ति प्राप्त की - जो गुजरात, उत्तरप्रदेश, राजस्थान और पंजाब की पहाड़ियों में विकसित हुई।[18] इसी प्रकार महाराणा संग्राम सिंह द्वितीय के शासनकाल में गीतगोविंद के चित्रों की लंबी श्रेणी अंकित की गई जो सरस्वती भण्डार, उदयपुर में सुरक्षित है।[19] यही नहीं बसहोली पहाड़ी और कांगड़ा शैली में भी जयदेव के कृष्ण के भावपूर्ण चित्रों का कलात्मक चित्रण मिलता है। अकबर के शासनकाल में भी गीतगोविंद की एक पाण्डुलिपि तैयार की गई जिसमें गीतगोविंद का मुगल शैली में चित्रण हैं जिसमें राधा और उनकी सखियों को मुगलकालीन वेषभूषा में दिखाया गया है।[20]

ISSN- 2350-0530(O), ISSN- 2394-3629(P)
Index Copernicus Value (ICV 2018): 86.20
DOI: 10.5281/zenodo.3591507

ढँढार शैली की चित्रकला में मुगल प्रभाव सर्वाधिक है । रज़्मनामा (महाभारत का फारसी अनुवाद) की प्रति अकबर के लिए इस शैली के चित्रकारों ने तैयार की जिसमें 169 चित्र हैं।

मध्यकालीन काव्य ने चित्रकला को बलवती किया। इस काल के सभी प्रमुख ग्रंथ चित्रकारों के प्रिय विषय बन गए। सगुण उपासक कवियों द्वारा अपने आराध्य देवों के जो मनोहारी चित्र खींचे गए उन्हें चित्रकारों ने अपने चित्रों का विषय बनाया। सूर का वात्सल्य हो या मीरा की भक्ति, तुलसी के मर्यादा पुरूषोत्तम हों या चैतन्य महाप्रभु के मनोहारी कृष्ण, सभी ने चित्रकला को स्वरूप प्रदान किया।

जहाँ राजपूत शैली में चित्रकारों ने रामचरित मानस को अपने चित्रों का आधार बनाया वहीं मालवा शैली में रामकथा को चित्रमाला के रूप में चित्रित किया गया। ताड़का वध, केवट प्रसंग, सीता स्वयंवर, अह्ल्या उद्धार, राम व सीता के चित्र बूँदी एवं पहाड़ी चित्रशैली की विशेषता रहे हैं और विभिन्न संग्रहालयों और निजी संग्रह में आज भी सुरक्षित हैं।

कृष्ण-काव्य ने मध्यकालीन चित्रकारों को खूब रिझाया। किशनगढ़ के राठौर राजा सावंतसिंह ने नागरीदास के कल्पित नाम से कृष्ण की प्रशंसा में भक्तिपूर्ण काव्य लिखे। वल्लभ संप्रदाय के अनुयायी होने से किशनगढ़ चित्रकला शैली पर वल्लभ संप्रदाय का प्रभाव दिखाई पड़ता है। उस समय के चित्रकार मोरध्वज निहालचंदजी ने अपने स्वामी की रचनाओं को अपनी तूलिका से मूर्त रूप प्रदान कर किशनगढ़ चित्रकला को शिखर पर पहुँचाया। इनके द्वारा बनाया गया चित्र 'बनी-ठनी' को ऐरिक डिक्सन ने भारत की मोनालिसा की संज्ञा दी है। बिहारी चंद्रिका ग्रंथ पर भी इस शैली में चित्र उपलब्ध होते हैं।

रीतिकालीन कवियों में केशव की "रसिकप्रिया "आकर्षण का केन्द्र रही। केशव के जीवनकाल में ही अकबर द्वारा रसिकप्रिया का चित्रण मुगल शैली में करवाया गया। मेवाड़ शैली के चित्रकार साहिबदीन ने विभिन्न पौराणिक विषयों के साथ-साथ रसिकप्रिया के चित्रों का दमकते रंगों से चित्रांकन किया। चित्रकार रूकनुद्दीन ने बीकानेर शैली में अनन्यतम चित्र बनाए। कांगड़ा शैली में केशव की नायिका का यह चित्रण बड़ा ही मार्मिक बन पड़ा है।

"कौनहुँ हेत न आइयो, प्रीतम जाके धाम
ताकों सोचति सोचि हिय, केशव उल्का वाम।" [21]

आमेर शैली में भी बिहारी सतसई पर बहुसंख्या में चित्र उपलब्ध है। इसी प्रकार बिहारी के निम्न दोहे पर आधारित कांगड़ा शैली का चित्र जिसे मानक नामक कवि ने बनाया और इसमें कवि की अनुभूति को बड़ी सूझबूझ से प्रस्तुत किया गया –

"कर समेटि कुच भुज उलटि, वाए सीस पटृटारि
कको मन बाँधे ना, जूरा बाँधन हरि।" [22]

अतः कहा जा सकता है कि रीतिकालीन काव्य और चित्रकला इस तरह एक दूसरे में समा गए हैं कि लगता है चित्रकार और कवि ने साथ बैठकर अपनी अनुभूतियों को अपनी-अपनी विधा में उकेरा होगा।
राजा रवि वर्मा के चित्र पर काव्य सृजन की प्रक्रिया को जानने के पश्चात यह भी जानना आवश्यक है कि राजा रवि वर्मा ने हिन्दू महाकाव्य व धर्म ग्रंथों पर चित्र बनाए जिनका संग्रह वड़ोदरा स्थित लक्ष्मी विलास महल के

संग्रहालय में है। उषा-अनिरूद्ध, दुष्यंत-शकुंतला, सत्यवादी हरिशचंद्र, दूत के रूप में कृष्ण, रावण व जटायु, कृष्ण एवं बलराम आदि चित्रों में उनका पौराणिक अध्ययन सजीव हो उठा है।

इस समय एक और उभरते सितारे अविन्द्रनाथ ठाकुर ने चित्रकला के क्षेत्र में महती भूमिका का निर्वहन किया। "राधा कृष्ण, उमर खय्याम, तिक्ष्यरक्षिती, शकुंतला, भगवान तथागत, दुर्गा, अर्जुन आदि चित्रों का सृजन किया।" जिसके मूल में काव्य रचनाओं का आधार है।

पौराणिक विषयों और कल्पित आख्यानों पर चित्रकार गगेन्द्रनाथ ठाकुर द्वारा बनाए गए चित्र बहुत ही सुंदर बन पड़े हैं। माँ से विदा लेते समय चैतन्य का भक्ति विह्वल कीर्तन तथा अन्य कई चित्रों में इस संत की भाव भंगिमाओं का सुंदर दर्शन चित्रकार ने किया है। क्षितिन्द्रनाथ मजूमदार ने भी चैतन्य और उनके आराध्य राधाकृष्ण के माधुर्य भाव को अपनी चित्रकला का आधार बनाकर मोहक रूप प्रदान किया।

चित्रकार नंदलाल बोस द्वारा महाभारत के चक्रव्यूह पर चित्रमाला तैयार की गई जो राष्ट्रीय आधुनिक कला वीथिका के संग्रह में है। इसके अतिरिक्त सती, शिव का विषपान, शिव विलाप, शिव ताण्डव, उमा की तपस्या, युधिष्ठिर की स्वर्ग यात्रा, दुर्गा, अह्ल्या, कर्ण आदि चित्र काव्य का आधार पाकर सजीव हो उठे हैं।

मंजीत बावा के चित्रों में सूफी और भारतीय धर्म की झलक मिलती है। चण्डी चरित्र, काली व शिव की उपस्थिति उनके चित्रों में प्रमुखता से दिखाई देती है। स्वतंत्रता के पश्चात छायावादी व प्रयोगवादी कविताओं को आधार बनाकर चित्र सृजन किया गया। प्रगतिशील लेखक संघ के रूप में साहित्यिक आदोलन शुरू हुआ तो उसकी प्रेरणा पाकर मुम्बई में प्रोग्रेसिव ग्रुप के नाम से चित्रकला संगठन स्थापित हुआ जिसके संस्थापक एच.एस. राजा, एम.एफ. हुसैन, सूज़ा, एस.आर. गाड़े थे। हाँलाकि इनकी चित्रकला पर पाश्चात्य प्रभाव दिखाई पड़ता है किन्तु वैदिक दर्शन, गुप्तकालीन कला, भारतीय मिथक चेतना एवं सहित्य से भी इनका जुड़ाव इनके चित्रों में दिखाई देता है।

रामकिंकर बैज ने अपनी चित्रकला का प्रारंभ धार्मिक कथाओं पर आधारित चित्र बनाकर किया वहीं तैयब मेहता की कला वर्तमान की घटना का संदर्भ पुराणों में खोजती है और पुराण कथा को आज का संदर्भ देती है। वासुदेव गायतोंडे और भूपेन्द्र खक्कर परम्पराओं से जुड़े चित्रकार हैं। भूपेन्द्र खक्कर मूलतः लेखक थे जो बाद में चित्रकार बने। उन्होंने पुराण कथाओं का अपने चित्रों में प्रयोग किया। अतः कहा जा सकता है कि आधुनिक चित्र शैली में नवीनता के दर्शन होते हैं किन्तु फिर भी किसी न किसी रूप में उसके विषय भारतीय साहित्य से जुड़े हुए हैं।

स्पष्ट है कि कवि जो लिखता है चित्रकार उसे अनुभूतियों एवं कल्पना से आकृति और प्रतीकों द्वारा अधिक स्पष्ट कर देता है। अतः चित्र काव्यगत भाव का वह प्रकाशन है जो सार्वजनिक, सार्वभौमिक व सार्वकालिक है। इसलिए ललित कलाओं में विशेष रूप से काव्य का संबंध चित्रकला से बहुत ही गहरा है।

संदर्भ

[1] भारतीय कला के पदचिह्न - डॉ जगदीश गुप्त पृ. 51
[2] भामह काव्यालंकार अनु. प्रो. देवेन्द्रनाथ शर्मा पृ. 17
[3] भरत मुनि नाट्य शास्त्र पृष्ठ 1/115)
[4] शुक्ल मृदुला (2013) सुर काव्य में कविता, संगीत और चित्रकला का अंतःसंबंध पृ. 28

[5] क्षेमेन्द्र, कविकण्ठाभरणम् काव्यमाला चतुर्थोगुच्छका, निर्णयसागर प्रेस, मुम्बई 1899, पृ. 127
[6] भास्कर न्यूज, नवम्बर 8, 2016
[7] कविताकलाप कवि - रायदेवी प्रसाद, संपादक आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी, क.स. 2, पृ. 1
[8] कविताकलाप ले.प. कामता प्रसाद गुरू क.स. 11, पृ. 16
[9] चाँद पत्रिका, फरवरी 13, 1997
[10] हिन्दी साहित्य का विकास, डॉ. नागेन्द्र
[11] चिदम्बरा - सुमित्रानंदन पंत चरण चिह्न पृष्ठ 9
[12] दीपशिखा- लेखिका महादेवी वर्मा, पृ.सं. 5
[13] कुछ कविताएँ और कुछ और कविताएँ - लेखक/कवि शमशेर बहादुरसिंह पृ.151
[14] शहर अब भी संभावना है - अशोक वाजपेयी, कलकत्ता भारतीय ज्ञानपीठ 1966, पृ. 49
[15] अशोक वाजपेयी - अगर इतने से - नई दिल्ली, राजकमल प्रकाशन 1986, पृ.35
[16] हिन्दी भक्ति श्रृंगार का स्वरूप - डॉ. मिथिलेश कांति, चैतन्य प्रकाशन, कानपुर 1963
[17] श्रृंगार रस का शास्त्रीय विवेचन, राजेश्वर प्रसाद चतुर्वेदी, सरस्वती पुस्तक सदन, आगरा 1969
[18] कांगड़ा पेंटिग ऑफ गीतगोविंद, पृ. 57
[19] रसिकप्रिया, आचार्य केद्वावदास - दोहा संख्या 7, पृष्ठ क्र. 147
[20] बिहारी, रत्नाकर - दोहा 686